يَقْذِفُوْنَ بِالْغَيْبِ مِنْ مَّكَانٍۭ بَعِيْدٍ ﴿۵۳﴾ وَ حِيْلَ بَيْنَهُمْ وَ بَيْنَ مَا

बे देखे फेंक मारते हैं[140] दूर मकान से[141] और रोक कर दी गई उन में और उस में

يَشْتَهُوْنَ كَمَا فُعِلَ بِاَشْيَاعِهِمْ مِّنْ قَبْلُ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا فِیْ شَكٍّ مُّرِيْبٍ ﴿۵۴﴾ ع ۶ ۱۲

जिसे चाहते हैं[142] जैसे उन के पहले गुरौहों से किया गया था[143] बेशक वोह धोका डालने वाले शक में थे[144]

ایاتها ۴۵ (۳۵) سُوْرَةُ فَاطِرٍ مَّكِّيَّةٌ (۴۳) رکوعاتها ۵

सूरए फ़ातिर मक्किय्या है, इस में पेंतालीस आयतें और पांच रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह़रबान रह़म वाला[1]

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ جَاعِلِ الْمَلٰٓىِٕكَةِ رُسُلًا اُولِیْۤ

सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जो आस्मानों और ज़मीन का बनाने वाला फ़िरिश्तों को रसूल करने वाला[2] जिन के

اَجْنِحَةٍ مَّثْنٰى وَ ثُلٰثَ وَ رُبٰعَ ؕ يَزِيْدُ فِی الْخَلْقِ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى

दो दो तीन तीन चार चार पर हैं बढ़ाता है आफ़्रीनिश (पैदाइश) में जो चाहे[3] बेशक **अल्लाह**

كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱﴾ مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۚ

हर चीज़ पर क़ादिर है **अल्लाह** जो रह़मत लोगों के लिये खोले[4] उस का कोई रोकने वाला नहीं

وَ مَا يُمْسِكْ ۙ فَلَا مُرْسِلَ لَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۲﴾ يٰۤاَيُّهَا

और जो कुछ रोक ले तो उस की रोक के बा'द उस का कोई छोड़ने वाला नहीं और वोही इ़ज़्ज़तो ह़िक्मत वाला है ऐ

النَّاسُ اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ؕ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللّٰهِ يَرْزُقُكُمْ

लोगो ! अपने ऊपर **अल्लाह** का एह़सान याद करो[5] क्या **अल्लाह** के सिवा और भी कोई ख़ालिक़ कि आस्मान और

देखने से पहले **140 :** या'नी बे जाने कह गुज़रते हैं, जैसा कि उन्हों ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की शान में कहा था कि वोह शाइ़र हैं, साह़िर हैं, काहिन हैं ह़ालां कि उन्हों ने कभी ह़ुज़ूर से शे'रो सेह़र व कहानत का सुदूर न देखा था। **141 :** या'नी सिद्क़ो वाक़िइय्यत से दूर, कि उन के उन मत़ाइ़न (त़ा'नों) को सिद्क़ से क़ुर्ब व नज़्दीकी भी नहीं। **142 :** या'नी तौबा व ईमान में। **143 :** कि उन की तौबा व ईमान वक़्ते यास क़बूल न फ़रमाई गई। **144 :** ईमानिय्यात के मुतअ़ल्लिक़। **1 :** सूरए फ़ात़िर मक्किय्या है, इस में पांच रुकूअ़, पेंतालीस आयतें, नव सो सत्तर कलिमे, तीन हज़ार एक सो तीस ह़ुरूफ़ हैं। **2 :** अपने अम्बिया की त़रफ़। **3 :** फ़िरिश्तों में और इन के सिवा और मख़्लूक़ में। **4 :** मिस्ल बारिश व रिज़्क़ व सिह़्ह़त वग़ैरा के। **5 :** कि उस ने तुम्हारे लिये ज़मीन को फ़र्श बनाया, आस्मान को बिग़ैर किसी सुतून के क़ाइम किया, अपनी राह बताने और ह़क़ की दा'वत देने के लिये रसूलों को भेजा, रिज़्क़ के दरवाज़े खोले।

www.dawateislami.net

مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۫ۖ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿۳﴾ وَ اِنْ

ज़मीन से[6] तुम्हें रोज़ी दे उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं तो तुम कहां औंधे जाते हो[7] और अगर

يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ ؕ وَ اِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ

येह तुम्हें झुटलाएं[8] तो बेशक तुम से पहले कितने ही रसूल झुटलाए गए[9] और सब काम **अल्लाह** ही की त़रफ़

الْاُمُوْرُ ﴿۴﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ

फिरते हैं[10] ऐ लोगो ! बेशक **अल्लाह** का वा'दा सच है[11] तो हरगिज़ तुम्हें धोका न दे दुन्या

الدُّنْيَا ٚ وقفة وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿۵﴾ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ

की ज़िन्दगी[12] और हरगिज़ तुम्हें **अल्लाह** के ह़िल्म पर फ़रेब न दे वोह बड़ा फ़रेबी[13] बेशक शैत़ान तुम्हारा दुश्मन है

فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ؕ اِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ؕ ﴿۶﴾

तो तुम भी उसे दुश्मन समझो[14] वोह तो अपने गुरौह को[15] इसी लिये बुलाता है कि दोज़ख़ियों में हों[16]

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ۬ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

काफ़िरों के लिये[17] सख़्त अ़ज़ाब है और जो ईमान लाए और अच्छे

ع ۱۳ الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿۷﴾ ع اَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ

काम किये[18] उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है तो क्या वोह जिस की निगाह में उस का बुरा काम आरास्ता किया गया

فَرَاٰهُ حَسَنًا ؕ فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۫ۖ فَلَا

कि उस ने उसे भला समझा हिदायत वाले की त़रह़ हो जाएगा[19] इस लिये **अल्लाह** गुमराह करता है जिसे चाहे और राह देता है जिसे चाहे तो

6 : मींह बरसा कर और त़रह़ त़रह़ के नबातात पैदा कर के 7 : और येह जानते हुए कि वोही ख़ालिक़ व राज़िक़ है ईमान व तौह़ीद से क्यूं फिरते हो ? इस के बा'द नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तसल्ली के लिये फ़रमाया जाता है 8 : ऐ मुस्त़फ़ा ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और तुम्हारी नुबुव्वत व रिसालत को न मानें और तौह़ीद व बअ़्स व ह़िसाब और अ़ज़ाब का इन्कार करें 9 : उन्हों ने सब्र किया, आप भी सब्र फ़रमाइये, कुफ़्फ़ार का अम्बिया के साथ क़दीम से येह दस्तूर चला आता है। 10 : वोह झुटलाने वालों को सज़ा देगा और रसूलों की मदद फ़रमाएगा। 11 : क़ियामत ज़रूर आनी है, मरने के बा'द ज़रूर उठना है, आ'माल का ह़िसाब यक़ीनन होगा, हर एक को उस के किये की जज़ा बेशक मिलेगी। 12 : कि इस की लज़्ज़तों में मश्ग़ूल हो कर आख़िरत को भूल जाओ। 13 : या'नी शैत़ान तुम्हारे दिलों में येह वस्वसा डाल कर कि गुनाहों से मज़ा उठा लो **अल्लाह** तआ़ला ह़िल्म फ़रमाने वाला है वोह दर गुज़र करेगा। **अल्लाह** तआ़ला बेशक ह़िल्म वाला है लेकिन शैत़ान की फ़रेब कारी येह है कि वोह बन्दों को इस त़रह़ तौबा व अ़मले सालेह़ से रोकता है और गुनाह व मा'सियत पर जरी करता है, उस के फ़रेब से होशियार रहो। 14 : और उस की इत़ाअ़त न करो और **अल्लाह** तआ़ला की त़ाअ़त में मश्ग़ूल रहो। 15 : या'नी अपने मुत्तबिईन को कुफ़्र की त़रफ़ 16 : अब शैत़ान के मुत्तबिईन और उस के मुख़ालिफ़ीन का ह़ाल तफ़्सील के साथ बयान फ़रमाया जाता है 17 : जो शैत़ान के गुरौह में से हैं 18 : और शैत़ान के फ़रेब में न आए और उस की राह पर न चले। 19 : हरगिज़ नहीं। बुरे काम को अच्छा समझने वाला राहयाब की त़रह़ क्या हो सकता है ! वोह उस बदकार से ब दरजहा बदतर है जो अपने ख़राब अ़मल को बुरा जानता हो और ह़क़ को ह़क़

www.dawateislami.net

تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ۝٨ وَ

तुम्हारी जान उन पर ह़सरतों में न जाए[20] अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ वोह करते हैं और

اللّٰهُ الَّذِيْۤ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَسُقْنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ

अल्लाह है जिस ने भेजीं हवाएं कि बादल उभारती हैं फिर हम उसे किसी मुर्दा शह़र की त़रफ़ रवां करते हैं[21]

فَاَحْيَيْنَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ كَذٰلِكَ النُّشُوْرُ ۝٩ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ

तो उस के सबब हम ज़मीन को ज़िन्दा फ़रमाते हैं उस के मरे पीछे[22] यूंही ह़श्र में उठना है[23] जिसे इ़ज़्ज़त की

الْعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ جَمِيْعًا ؕ اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ

चाह हो तो इ़ज़्ज़त तो सब अल्लाह के हाथ है[24] उसी की त़रफ़ चढ़ता है पाकीज़ा कलाम[25] और जो नेक काम है

يَرْفَعُهٗ ؕ وَالَّذِيْنَ يَمْكُرُوْنَ السَّيِّاٰتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ وَمَكْرُ

वोह उसे बुलन्द करता है[26] और वोह जो बुरे दाउं (फ़रेब) करते हैं उन के लिये सख़्त अ़ज़ाब है[27] और उन्हीं

اُولٰٓئِكَ هُوَ يَبُوْرُ ۝١٠ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ

का मक्र बरबाद होगा[28] और अल्लाह ने तुम्हें बनाया[29] मिट्टी से फिर[30] पानी की बूंद से फिर तुम्हें किया

और बात़िल को बात़िल समझता हो। **शाने नुज़ूल :** येह आयत अबू जहल वग़ैरा मुश्रिकीने मक्का के ह़क़ में नाज़िल हुई जो अपने शिर्को कुफ़्र जैसे क़बीह़ अफ़्आ़ल को शैत़ान के बहकाने और भला समझाने से अच्छा समझते थे। और एक क़ौल येह है कि येह आयत अस्ह़ाबे बिद्अ़त व हवा के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन में रवाफ़िज़ व ख़वारिज वग़ैरा दाख़िल हैं जो अपनी बद मज़्हबियों को अच्छा जानते हैं और इन्हीं के ज़ुम्रे में दाख़िल हैं तमाम बद मज़्हब, ख़्वाह वहाबी हों या ग़ैर मुक़ल्लिद या मिरज़ाई या चक्ड़ाली। और कबीरा गुनाह वाले जो अपने गुनाहों को बुरा जानते हैं और ह़लाल नहीं समझते इस में दाख़िल नहीं। **20 :** कि अफ़्सोस वोह ईमान न लाए और ह़क़ को क़बूल करने से महरूम रहे। मुराद येह है कि आप उन के कुफ़्र व हलाकत का ग़म न फ़रमाएं। **21 :** जिस में सब्ज़ा और खेती नहीं और ख़ुश्क साली से वहां की ज़मीन बेजान हो गई है। **22 :** और उस को सर सब्ज़ो शादाब कर देते हैं इस से हमारी क़ुदरत ज़ाहिर है। **23 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से एक सह़ाबी ने अ़र्ज़ किया कि अल्लाह तआ़ला मुर्दे किस त़रह़ ज़िन्दा फ़रमाएगा ? ख़ल्क़ में इस की कोई निशानी हो तो इर्शाद फ़रमाइये। फ़रमाया कि क्या तेरा किसी ऐसे जंगल में गुज़र हुवा है जो ख़ुश्क साली से बेजान हो गया हो और वहां सब्ज़ा का नामो निशान न रहा हो फिर कभी उसी जंगल में गुज़र हुवा हो और उस को हरा भरा लहलहाता पाया हो ? उन सह़ाबी ने अ़र्ज़ किया : बेशक ऐसा देखा है। हुज़ूर ने फ़रमाया : ऐसे ही अल्लाह मुर्दों को ज़िन्दा करेगा और ख़ल्क़ में येह उस की निशानी है। **24 :** दुन्या व आख़िरत में वोही इ़ज़्ज़त का मालिक है जिसे चाहे इ़ज़्ज़त दे तो जो इ़ज़्ज़त का त़लब गार हो वोह अल्लाह तआ़ला से इ़ज़्ज़त त़लब करे क्यूं कि हर चीज़ उस के मालिक ही से त़लब की जाती है। ह़दीस शरीफ़ में है कि रब तआ़ला हर रोज़ फ़रमाता है जिसे इ़ज़्ज़ते दारैन की ख़्वाहिश हो चाहिये कि वोह ह़ज़रते अ़ज़ीज़ جَلَّ عِزَّتُهٗ (या'नी अल्लाह तआ़ला) की इ़त़ाअ़त करे और ज़रीआ़ त़लबे इ़ज़्ज़त का ईमान और आ'माले सालिह़ा हैं। **25 :** या'नी उस के मह़ल्ले क़बूल व रिज़ा तक पहुंचता है। और पाकीज़ा कलाम से मुराद कलिमए त़ौह़ीद व तस्बीह़ व तह़्मीद व तक्बीर वग़ैरा हैं जैसा कि ह़ाकिम व बैहक़ी ने रिवायत किया और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने कलिमए त़य्यिब की तफ़्सीर "ज़िक्र" से फ़रमाई और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने क़ुरआन और दुआ भी मुराद ली है। **26 :** नेक काम से मुराद वोह अ़मल व इबादत है जो इख़्लास से हो और मा'ना येह हैं कि कलिमए त़य्यिबा अ़मल को बुलन्द करता है क्यूं कि अ़मल बे तौह़ीद व ईमान मक़्बूल नहीं। या येह मा'ना हैं कि अ़मले सालेह़ को अल्लाह तआ़ला रिफ़्अ़ते क़बूल अ़त़ा फ़रमाता है। या येह मा'ना हैं कि अ़मले नेक अ़मल करने वाले का मर्तबा बुलन्द करते हैं तो जो इ़ज़्ज़त चाहे उस को लाज़िम है कि नेक अ़मल करे। **27 :** मुराद उन मक्र करने वालों से वोह क़ुरैश हैं जिन्हों ने "दारुन्नदवा" में जम्अ़ हो कर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की निस्बत क़ैद करने और क़त्ल करने और जला वत़न करने के मश्वरे किये थे जिस का तफ़्सीली बयान सूरए अन्फ़ाल में हो चुका है। **28 :** और वोह अपने दाउं व फ़रेब में काम्याब न होंगे। चुनान्चे ऐसा ही हुवा हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

اَزْوَاجًا ؕ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ؕ وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ

जोड़े जोड़े[31] और किसी मादा को पेट नहीं रहता और न वोह जनती है मगर उस के इ़ल्म से और जिस बड़ी उ़म्र वाले को

مُّعَمَّرٍ وَّلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِهٖۤ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ

उ़म्र दी जाए या जिस किसी की उ़म्र कम रखी जाए येह सब एक किताब में है[32] बेशक येह अल्लाह को

يَسِيْرٌ ﴿۱۱﴾ وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرٰنِ ۖۗ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَآئِغٌ شَرَابُهٗ وَ

आसान है[33] और दोनों समुन्दर एक से नहीं[34] येह मीठा है ख़ूब मीठा पानी ख़ुश गवार और

هٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ؕ وَمِنْ كُلٍّ تَاْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْنَ

येह खारी है तल्ख़ और हर एक में से तुम खाते हो ताज़ा गोश्त[35] और निकालते हो

حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيْهِ مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَ

पहनने का एक गहना[36] और तू कश्तियों को उस में देखे कि पानी चीरती हैं[37] ताकि तुम उस का फ़ज़्ल तलाश करो[38] और

لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۲﴾ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۙ

किसी तरह हक़ मानो[39] रात लाता है दिन के हिस्से में[40] और दिन लाता है रात के हिस्से में[41]

وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖۗ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ

और उस ने काम में लगाए सूरज और चांद हर एक एक मुक़र्रर मीआ़द चलता है[42] येह है अल्लाह तुम्हारा रब

لَهُ الْمُلْكُ ؕ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ ؕ ﴿۱۳﴾

उसी की बादशाही है और उस के सिवा जिन्हें तुम पूजते हो[43] दानए खुरमा के छिल्के तक के मालिक नहीं

اِنْ تَدْعُوْهُمْ لَا يَسْمَعُوْا دُعَآءَكُمْ ۚ وَلَوْ سَمِعُوْا مَا اسْتَجَابُوْا لَكُمْ ؕ

तुम उन्हें पुकारो तो वोह तुम्हारी पुकार न सुनें[44] और बिलफ़र्ज़ सुन भी लें तो तुम्हारी हाजत रवा न कर सकें[45]

उन के शर से महफ़ूज़ रहे और उन्हों ने अपनी मक्कारियों की सज़ाएं पाईं कि बद्र में क़ैद भी हुए क़त्ल भी किये गए और मक्कए मुकर्रमा से निकाले भी गए। **29 :** या'नी तुम्हारी अस्ल ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को **30 :** उन की नस्ल को **31 :** मर्द व औ़रत **32 :** या'नी लौह़े महफ़ूज़ में। ह़ज़रते क़तादा से मरवी है कि मुअ़म्मर वोह है जिस की उ़म्र साठ साल को पहुंचे और कम उ़म्र वाला वोह जो इस से क़ब्ल मर जाए। **33 :** या'नी अ़मल व अजल का मक्तूब फ़रमाना। **34 :** बल्कि दोनों में फ़र्क़ है। **35 :** या'नी मछली **36 :** गौहर व मरजान। **37 :** दरिया में चलते हुए और एक ही हवा में आती भी हैं जाती भी हैं **38 :** तिजारतों में नफ़्अ़ ह़ासिल कर के। **39 :** और अल्लाह तआ़ला की ने'मतों की शुक्र गुज़ारी करो। **40 :** तो दिन बढ़ जाता है **41 :** तो रात बढ़ जाती है यहां तक कि बढ़ने वाले दिन या रात की मिक़्दार पन्दरह घन्टे तक पहुंचती है और घटने वाला नव घन्टे का रह जाता है। **42 :** या'नी रोज़े क़ियामत तक कि जब क़ियामत आ जाएगी तो इन का चलना मौक़ूफ़ हो जाएगा और येह निज़ाम बाक़ी न रहेगा। **43 :** या'नी बुत **44 :** क्यूं कि जमादे बेजान हैं। **45 :** क्यूं कि अस्लन क़ुदरत व इख़्तियार नहीं रखते।

www.dawateislami.net

وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُوْنَ بِشِرْكِكُمْ ؕ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيْرٍ ﴿۱۴﴾ يٰۤاَيُّهَا

और क़ियामत के दिन वोह तुम्हारे शिर्क से मुन्किर होंगे[46] और तुझे कोई न बताएगा उस बताने वाले की त़रह़[47] ऐ

النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿۱۵﴾ اِنْ يَّشَاْ

लोगो ! तुम सब अल्लाह के मोह़ताज[48] और अल्लाह ही बे नियाज़ है सब ख़ूबियों सराहा वोह चाहे

يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿۱۶﴾ ۚ وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿۱۷﴾ وَلَا

तो तुम्हें ले जाए[49] और नई मख़्लूक़ ले आए[50] और येह अल्लाह पर कुछ दुश्वार नहीं और कोई

تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ وَاِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ اِلٰى حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ

बोझ उठाने वाली जान दूसरी का बोझ न उठाएगी[51] और अगर कोई बोझ वाली अपना बोझ बटाने को किसी को बुलाए तो उस के बोझ

مِنْهُ شَيْءٌ وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ؕ اِنَّمَا تُنْذِرُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ

में से कोई कुछ न उठाएगा अगर्चे क़रीब रिश्तेदार हो[52] ऐ महबूब तुम्हारा डर सुनाना तो उन्हीं को काम देता है जो बे देखे अपने

بِالْغَيْبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ؕ وَمَنْ تَزَكّٰى فَاِنَّمَا يَتَزَكّٰى لِنَفْسِهٖ ؕ وَاِلَى

रब से डरते और नमाज़ क़ाइम रखते हैं और जो सुथरा हुवा[53] तो अपने ही भले को सुथरा हुवा[54] और अल्लाह ही

اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿۱۸﴾ وَمَا يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ﴿۱۹﴾ ۙ وَلَا الظُّلُمٰتُ وَلَا

की त़रफ़ फिरना है और बराबर नहीं अन्धा और अंख्यारा[55] और न अंधेरियां[56] और

النُّوْرُ ﴿۲۰﴾ ۙ وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُوْرُ ﴿۲۱﴾ ۚ وَمَا يَسْتَوِي الْاَحْيَآءُ وَلَا

उजाला[57] और न साया[58] और न तेज़ धूप[59] और बराबर नहीं ज़िन्दे और

46 : और बेज़ारी का इज़्हार करेंगे और कहेंगे तुम हमें न पूजते थे। **47 :** या'नी दारैन के अह़वाल और बुत परस्ती के मआल की जैसी ख़बर अल्लाह तआ़ला देता है और कोई नहीं दे सकता। **48 :** या'नी उस के फ़ज़्ल व एह़सान के ह़ाजत मन्द हो और तमाम ख़ल्क़ उस की मोह़ताज है। ह़ज़रते ज़ुन्नून ने फ़रमाया कि ख़ल्क़ हर दम और हर लह़ज़ा अल्लाह तआ़ला की मोह़ताज है और क्यूं न होगी उन की हस्ती और उन की बक़ा सब उस के करम से है। **49 :** या'नी तुम्हें मा'दूम कर दे क्यूं कि वोह बे नियाज़ और ग़नी बिज़्ज़ात है। **50 :** बजाए तुम्हारे जो मुत़ीअ़ और फ़रमां बरदार हो **51 :** मा'ना येह हैं कि रोज़े क़ियामत हर एक जान पर उसी के गुनाहों का बार होगा जो उस ने किये हैं और कोई जान किसी दूसरे के इ़वज़ न पकड़ी जाएगी अलबत्ता जो गुमराह करने वाले हैं उन के गुमराह करने से जो लोग गुमराह हुए उन की तमाम गुमराहियों का बार उन गुमराहों पर भी होगा और उन गुमराह करने वालों पर भी जैसा कि कलामे करीम में इर्शाद हुवा ''وَلَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ'' और दर ह़क़ीक़त येह उन की अपनी कमाई है दूसरे की नहीं। **52 :** बाप या मां, बेटा या भाई कोई किसी का बोझ न उठाएगा। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि मां बाप बेटे को लिपटेंगे और कहेंगे ऐ हमारे बेटे हमारे कुछ गुनाह उठा ले। वोह कहेगा : मेरे इम्कान में नहीं, मेरा अपना बार क्या कम है। **53 :** या'नी बदियों से बचा और नेक अ़मल किये **54 :** उस नेकी का नफ़्अ़ वोही पाएगा। **55 :** या'नी जाहिल और आ़लिम या काफ़िर और मोमिन **56 :** या'नी कुफ़्र **57 :** या'नी ईमान **58 :** या'नी ह़क़ या जन्नत **59 :** या'नी बात़िल या दोज़ख़।

www.dawateislami.net

الْاَمْوَاتُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُسْمِعُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَاۤ اَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّنْ فِي

मुर्दे[60] बेशक अल्लाह सुनाता है जिसे चाहे[61] और तुम नहीं सुनाने वाले उन्हें जो क़ब्रों

الْقُبُوْرِ ﴿۲۲﴾ اِنْ اَنْتَ اِلَّا نَذِيْرٌ ﴿۲۳﴾ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّ

में पड़े हैं[62] तुम तो येही डर सुनाने वाले हो[63] ऐ महबूब बेशक हम ने तुम्हें हक़ के साथ भेजा खुश ख़बरी देता[64] और

نَذِيْرًا ؕ وَاِنْ مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ ﴿۲۴﴾ وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ

डर सुनाता[65] और जो कोई गुरौह था सब में एक डर सुनाने वाला गुज़र चुका[66] और अगर येह[67] तुम्हें झुटलाएं तो

كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالزُّبُرِ وَ

इन से अगले भी झुटला चुके हैं[68] उन के पास उन के रसूल आए रोशन दलीलें[69] और सहीफ़े और

ع ٣ ١٢ ١٥ بِالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿۲۵﴾ ثُمَّ اَخَذْتُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿۲۶﴾ ع

चमक्ती किताब[70] ले कर फिर मैं ने काफ़िरों को पकड़ा[71] तो कैसा हुवा मेरा इन्कार[72]

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخْتَلِفًا

क्या तू ने न देखा कि अल्लाह ने आस्मान से पानी उतारा[73] तो हम ने उस से फल निकाले रंग

اَلْوَانُهَا ؕ وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌۢ بِيْضٌ وَّحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهَا وَغَرَابِيْبُ

बरंग[74] और पहाड़ों में रास्ते हैं सफ़ेद और सुर्ख़ रंग रंग के और कुछ काले

سُوْدٌ ﴿۲۷﴾ وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَآبِّ وَالْاَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ كَذٰلِكَ ؕ

भुचंग (सियाह काले) और आदमियों और जानवरों और चारपायों के रंग यूंही तरह तरह के हैं[75]

60 : या'नी मोमिनीन और कुफ़्फ़ार या उलमा और जुह्हाल। 61 : या'नी जिस की हिदायत मन्ज़ूर हो उस को तौफ़ीक़े क़बूल अता फ़रमाता है। 62 : या'नी कुफ़्फ़ार को। इस आयत में कुफ़्फ़ार को मुर्दों से तश्बीह दी गई कि जिस तरह मुर्दे सुनी हुई बात से नफ़्अ़ नहीं उठा सकते और पन्द पज़ीर नहीं होते बद अन्जाम कुफ़्फ़ार का भी येही हाल है कि वोह हिदायत व नसीहत से मुन्तफ़िअ़ नहीं होते। इस आयत से मुर्दों के न सुनने पर इस्तिद्लाल करना सहीह नहीं है क्यूं कि आयत में क़ब्र वालों से मुराद कुफ़्फ़ार हैं न कि मुर्दे और सुनने से मुराद वोह सुनना है जिस पर राहयाबी का नफ़्अ़ मुरत्तब हो। रहा मुर्दों का सुनना वोह अहादीसे कसीरा से साबित है, इस मस्अले का बयान बीसवें पारे के दूसरे रुकूअ़ में गुज़रा। 63 : तो अगर सुनने वाला आप के इन्ज़ार (डराने) पर कान रखे और बगोशे क़बूल सुने तो नफ़्अ़ पाए और अगर मुसिर्रीन मुन्किरीन में से हो और आप की नसीहत से पन्द पज़ीर न हो (सबक़ न सीखे) तो आप का कुछ हरज नहीं वोही महरूम है। 64 : ईमानदारों को जन्नत की 65 : काफ़िरों को अ़ज़ाब का। 66 : ख़्वाह वोह नबी हो या आलिमे दीन जो नबी की तरफ़ से ख़ल्क़े ख़ुदा को अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ दिलाए। 67 : कुफ़्फ़ारे मक्का 68 : अपने रसूलों को। कुफ़्फ़ार का क़दीम (ज़माने) से अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के साथ येही बरताव रहा है। 69 : या'नी नुबुव्वत पर दलालत करने वाले मो'जिज़ात 70 : तौरैत व इन्जील व ज़बूर 71 : तरह तरह के अ़ज़ाबों से ब सबब उन की तक्ज़ीबों के 72 : मेरा अ़ज़ाब देना। 73 : बारिश नाज़िल की 74 : सब्ज़, सुर्ख़, ज़र्द, वग़ैरा तरह तरह के अनार, सेब, इन्जीर, अंगूर, खजूर वग़ैरा बे शुमार। 75 : जैसे फलों और पहाड़ों में, यहां अल्लाह तआ़ला ने अपनी आयतें और अपने निशानहाए क़ुदरत और आसारे सन्अ़त जिन से उस की ज़ात व सिफ़ात पर इस्तिद्लाल किया जाए ज़िक्र कीं, इस के बा'द फ़रमाया।

www.dawateislami.net

اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ غَفُوْرٌ ﴿۲۸﴾ اِنَّ

अल्लाह से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इल्म वाले हैं[76] बेशक अल्लाह इज़्ज़त वाला बख़्शने वाला बेशक

الَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا

वोह जो अल्लाह की किताब पढ़ते हैं और नमाज़ क़ाइम रखते और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में ख़र्च करते हैं पोशीदा

وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ ﴿۲۹﴾ لِيُوَفِّيَهُمْ اُجُوْرَهُمْ وَ

और ज़ाहिर वोह ऐसी तिजारत के उम्मीद वार हैं[77] जिस में हरगिज़ टोटा (नुक़्सान) नहीं ताकि उन के सवाब उन्हें भरपूर दे और

يَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿۳۰﴾ وَالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ

अपने फ़ज़्ल से और ज़ियादा अ़ता करे बेशक वोह बख़्शने वाला क़द्र फ़रमाने वाला है और वोह किताब जो हम ने तुम्हारी

مِنَ الْكِتٰبِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِعِبَادِهٖ لَخَبِيْرٌۢ

तरफ़ वहय भेजी[78] वोही हक़ है अपने से अगली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाती हुई बेशक अल्लाह अपने बन्दों से ख़बरदार

بَصِيْرٌ ﴿۳۱﴾ ثُمَّ اَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۚ فَمِنْهُمْ

देखने वाला है[79] फिर हम ने किताब का वारिस किया अपने चुने हुए बन्दों को[80] तो उन में कोई

ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۚ وَمِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَيْرٰتِ بِاِذْنِ

अपनी जान पर ज़ुल्म करता है और उन में कोई मियाना चाल पर है और उन में कोई वोह है जो अल्लाह के हुक्म से भलाइयों में सब्क़त

اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ؕ ﴿۳۲﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا يُحَلَّوْنَ

ले गया[81] येही बड़ा फ़ज़्ल है बसने के बाग़ों में दाख़िल होंगे वोह[82] उन में

76 : और उस की सिफ़ात जानते और उस की अ़ज़मत को पहचानते हैं, जितना इल्म ज़ियादा उतना ख़ौफ़ ज़ियादा। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि मुराद येह है कि मख़्लूक़ में अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ उस को है जो अल्लाह तआ़ला के जबरूत और उस की इज़्ज़तो शान से बा ख़बर है। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क़सम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की, कि मैं अल्लाह तआ़ला को सब से ज़ियादा जानने वाला हूं और सब से ज़ियादा उस का ख़ौफ़ रखने वाला हूं। **77 :** या'नी सवाब के **78 :** या'नी क़ुरआने मजीद **79 :** और उन के ज़ाहिर व बातिन का जानने वाला। **80 :** या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की उम्मत को येह किताब अ़ता फ़रमाई जिन्हें तमाम उम्मतों पर फ़ज़ीलत दी और सय्यिदे रुसुल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ग़ुलामी व निआज़ मन्दी की करामत व शराफ़त से मुशर्रफ़ फ़रमाया, इस उम्मत के लोग मुख़्तलिफ़ मदारिज व मरातिब रखते हैं। **81 :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि सब्क़त ले जाने वाला मोमिन मुख़्लिस है और "मुक़्तसिद" या'नी मियाना रवी करने वाला वोह जिस के अ़मल रिया से हों और ज़ालिम से मुराद यहां वोह है जो ने'मते इलाही का मुन्किर तो न हो लेकिन शुक्र बजा न लाए। हदीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि हमारा "साबिक़" तो साबिक़ ही है और "मुक़्तसिद" नाजी और "ज़ालिम" मग़्फ़ूर। एक और हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : नेकियों में सब्क़त ले जाने वाला जन्नत में बे हिसाब दाख़िल होगा और मुक़्तसिद से हिसाब में आसानी की जाएगी और ज़ालिम मक़ामे हिसाब में रोका जाएगा उस को परेशानी पेश आएगी फिर जन्नत में दाख़िल होगा। उम्मुल मुअमिनीन हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया कि **साबिक़** अ़हदे रिसालत के वोह मुख़्लिसीन हैं जिन के लिये रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۚ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ﴿۳۳﴾ وَقَالُوا

सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे और वहां उन की पोशाक रेश्मी है और कहेंगे

الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ؕ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُ ۨ ﴿۳۴﴾ لا

सब ख़ूबियां अल्लाह को जिस ने हमारा ग़म दूर किया[83] बेशक हमारा रब बख़्शने वाला क़द्र फ़रमाने वाला है[84]

الَّذِيْٓ اَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا

वोह जिस ने हमें आराम की जगह उतारा अपने फ़ज़्ल से हमें उस में न कोई तक्लीफ़ पहुंचे न हमें उस में कोई

فِيْهَا لُغُوْبٌ ﴿۳۵﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ

तकान लाहिक़ हो और जिन्हों ने कुफ़्र किया उन के लिये जहन्नम की आग है न उन की क़ज़ा आए

فَيَمُوْتُوْا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِيْ كُلَّ كَفُوْرٍ ﴿۳۶﴾ ج

कि मर जाएं[85] और न उन पर उस का[86] अ़ज़ाब कुछ हलका किया जाए हम ऐसी ही सज़ा देते हैं हर बड़े नाशुक्रे को

وَهُمْ يَصْطَرِخُوْنَ فِيْهَا ۚ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا

और वोह उस में चिल्लाते होंगे[87] ऐ हमारे रब हमें निकाल[88] कि हम अच्छा काम करें उस के ख़िलाफ़ जो पहले

نَعْمَلُ ؕ اَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيْهِ مَنْ تَذَكَّرَ وَجَآءَكُمُ النَّذِيْرُ ؕ

करते थे[89] और क्या हम ने तुम्हें वोह उ़म्र न दी थी जिस में समझ लेता जिसे समझना होता और डर सुनाने वाला[90] तुम्हारे पास तशरीफ़ लाया था[91]

فَذُوْقُوْا فَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ﴿۳۷﴾ ع اِنَّ اللّٰهَ عٰلِمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ وَ

तो अब चखो[92] कि ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं बेशक अल्लाह जानने वाला है आस्मानों और ज़मीन की

الْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۳۸﴾ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ

हर छुपी बात का बेशक वोह दिलों की बात जानता है वोही है जिस ने तुम्हें ज़मीन में अगलों का

ने जन्नत की बिशारत दी और **मुक़्तसिद** वोह अस्ह़ाब हैं जो आप के त़रीक़े पर आ़मिल रहे और **ज़ालिम** लि नफ़्सिही हम तुम जैसे लोग हैं। येह कमाल इन्किसार था ह़ज़रते उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का कि अपने आप को इस तीसरे त़ब्क़े में शुमार फ़रमाया बा वुजूद उस जलालते मन्ज़िलत व रिफ़्अ़ते दरजात के जो अल्लाह तआ़ला ने आप को अ़त़ा फ़रमाई थी और भी इस की तफ़्सीर में बहुत अक़्वाल हैं जो तफ़ासीर में मुफ़स्सलन मज़्कूर हैं। **82 :** तीनों गुरौह **83 :** इस ग़म से मुराद या दोज़ख़ का ग़म है या मौत का या गुनाहों का या त़ाअ़तों के ग़ैर मक़्बूल होने का या अह्वाले क़ियामत का, ग़रज़ उन्हें कोई ग़म न होगा और वोह इस पर अल्लाह की ह़म्द करेंगे। **84 :** कि गुनाहों को बख़्शता है और त़ाअ़तें क़बूल फ़रमाता है। **85 :** और मर कर अ़ज़ाब से छूट सकें **86 :** या'नी जहन्नम का **87 :** या'नी जहन्नम में चीख़ते और फ़रियाद करते होंगे कि **88 :** या'नी दोज़ख़ से निकाल और दुन्या में भेज **89 :** या'नी हम बजाए कुफ़्र के ईमान लाएं और बजाए मा'सियत व ना फ़रमानी के तेरी इत़ाअ़त और फ़रमां बरदारी करें। इस पर उन्हें जवाब दिया जाएगा **90 :** या'नी रसूले अकरम सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم **91 :** तुम ने उस रसूले मोह़तरम की दा'वत क़बूल न की और उन की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी बजा न लाए। **92 :** अ़ज़ाब का मज़ा।

www.dawateislami.net

فِي الْاَرْضِ ؕ فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ؕ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ

जा नशीन किया[93] तो जो कुफ़्र करे[94] उस का कुफ़्र उसी पर पड़े[95] और काफ़िरों को उन का कुफ़्र उन के

عِنْدَ رَبِّهِمْ اِلَّا مَقْتًا ۚ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ اِلَّا خَسَارًا ﴿٣٩﴾

रब के यहां नहीं बढ़ाएगा मगर बेज़ारी[96] और काफ़िरों को उन का कुफ़्र न बढ़ाएगा मगर नुक़्सान[97]

قُلْ اَرَءَيْتُمْ شُرَكَآءَكُمُ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اَرُوْنِيْ مَاذَا

तुम फ़रमाओ भला बताओ तो अपने वोह शरीक[98] जिन्हें अल्लाह के सिवा पूजते हो मुझे दिखाओ

خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ۚ اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا فَهُمْ

उन्हों ने ज़मीन में से कौन सा हिस्सा बनाया या आस्मानों में कुछ उन का साझा है[99] या हम ने उन्हें कोई किताब दी है

عَلٰى بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ اِنْ يَّعِدُ الظّٰلِمُوْنَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا اِلَّا غُرُوْرًا ﴿٤٠﴾

कि वोह उस की रोशन दलीलों पर हैं[100] बल्कि ज़ालिम आपस में एक दूसरे को वा'दा नहीं देते मगर फ़रेब का[101]

اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا ۚ وَلَئِنْ زَالَتَآ اِنْ

बेशक अल्लाह रोके हुए है आस्मानों और ज़मीन को कि जुम्बिश न करे[102] और अगर वोह हट जाएं तो

اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿٤١﴾ وَاَقْسَمُوْا

उन्हें कौन रोके अल्लाह के सिवा बेशक वोह हिल्म वाला बख़्शने वाला है और उन्हों ने

بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ لَّيَكُوْنُنَّ اَهْدٰى مِنْ

अल्लाह की क़सम खाई अपनी क़समों में हद की कोशिश से कि अगर उन के पास कोई डर सुनाने वाला आया तो वोह ज़रूर किसी न किसी

اِحْدَى الْاُمَمِ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ مَّا زَادَهُمْ اِلَّا نُفُوْرًا ﴿٤٢﴾

गुरोह से ज़ियादा राह पर होंगे[103] फिर जब उन के पास डर सुनाने वाला तशरीफ़ लाया[104] तो उस ने उन्हें न बढ़ाया मगर नफ़रत करना[105]

93 : और उन की अम्लाक व मक़्बूज़ात का मालिक व मुतसर्रिफ़ बनाया और उन के मनाफ़ेअ़ तुम्हारे लिये मुबाह़ किये ताकि तुम ईमान व ताअ़त इख़्तियार कर के शुक्र गुज़ारी करो। **94 :** और इन ने'मतों पर शुक्रे इलाही न बजा लाए **95 :** या'नी अपने कुफ़्र का वबाल उसी को बरदाश्त करना पड़ेगा **96 :** या'नी ग़ज़बे इलाही **97 :** आख़िरत में। **98 :** या'नी बुत **99 :** कि आस्मानों के बनाने में उन्हें कुछ दख़्ल हो, किस सबब से उन्हें मुस्तह़िक़े इबादत क़रार देते हो **100 :** इन में से कोई भी बात नहीं। **101 :** कि उन में जो बहकाने वाले हैं वोह अपने मुत्तबिईन को धोका देते हैं और बुतों की त़रफ़ से उन्हें बातिल उम्मीदें दिलाते हैं। **102 :** वरना आस्मान व ज़मीन के दरमियान शिर्क जैसी मा'सियत हो तो आस्मान व ज़मीन कैसे क़ाइम रहें। **103 :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की बि'सत से पहले क़ुरैश ने यहूदो नसारा के अपने रसूलों को न मानने और उन को झुटलाने की निस्बत कहा था कि अल्लाह तआ़ला उन पर ला'नत करे और उन के पास अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से रसूल आए और उन्हों ने उन्हें झुटलाया और न माना ख़ुदा की क़सम अगर हमारे पास कोई रसूल आए तो हम उन से ज़ियादा राह पर होंगे और उस रसूल को मानने में उन के बेहतर गुरोह पर सब्क़त ले जाएंगे। **104 :** या'नी सय्यिदुल मुर्सलीन ख़ातमुन्नबिय्यीन ह़बीबे ख़ुदा मुह़म्मद

www.dawateislami.net

اسْتِكْبَارًا فِي الْأَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ۚ وَلَا يَحِيقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ إِلَّا

अपनी जान को ज़मीन में ऊंचा खींचना और बुरा दाउं[106] और बुरा दाउं (फ़रेब) अपने चलने वाले ही

بِأَهْلِهِ ۚ فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا سُنَّتَ الْأَوَّلِينَ ۚ فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ

पर पड़ता है[107] तो काहे के इन्तिज़ार में हैं मगर उसी के जो अगलों का दस्तूर हुवा[108] तो तुम हरगिज़ अल्लाह के दस्तूर को

اللَّهِ تَبْدِيلًا ۖ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَحْوِيلًا ﴿٤٣﴾ أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي

बदलता न पाओगे और हरगिज़ अल्लाह के क़ानून को टलता न पाओगे और क्या उन्हों ने ज़मीन में

الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوا أَشَدَّ

सफ़र न किया कि देखते उन से अगलों का कैसा अन्जाम हुवा[109] और वोह उन से

مِنْهُمْ قُوَّةً ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعْجِزَهُ مِنْ شَيْءٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي

ज़ोर में सख़्त थे[110] और अल्लाह वोह नहीं जिस के क़ाबू से निकल सके कोई शै आस्मानों और

الْأَرْضِ ۚ إِنَّهُ كَانَ عَلِيمًا قَدِيرًا ﴿٤٤﴾ وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِمَا

ज़मीन में बेशक वोह इल्मो क़ुदरत वाला है और अगर अल्लाह लोगों को उन के किये

كَسَبُوا مَا تَرَكَ عَلَىٰ ظَهْرِهَا مِنْ دَابَّةٍ وَلَٰكِنْ يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ

पर पकड़ता[111] तो ज़मीन की पीठ पर कोई चलने वाला न छोड़ता लेकिन एक मुक़र्रर मीआद[112] तक उन्हें ढील

٥ ع ١٧ مُسَمًّى ۖ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِعِبَادِهِ بَصِيرًا ﴿٤٥﴾ ع

देता है फिर जब उन का वा'दा आएगा तो बेशक अल्लाह के सब बन्दे उस की निगाह में हैं[113]

اٰياتها ٨٣ ﴿٣٦ سُورَةُ يٰسٓ مَكِّيَّةٌ ٤١﴾ ركوعاتها ٥

सूरए यासीन मक्किय्या है, इस में तिरासी आयतें और पांच रुकूअ़ हैं

मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की रोनक़ अफ़्रोज़ी व जल्वा आराई हुई **105 :** हक़ व हिदायत से और **106 :** बुरे दाउं से मुराद या तो शिर्क व कुफ़्र है या रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ मक्रो फ़रेब करना। **107 :** या'नी मक्कार पर। चुनान्चे फ़रेब कारी करने वाले बद्र में मारे गए। **108 :** कि उन्हों ने तक्ज़ीब की और उन पर अ़ज़ाब नाज़िल हुए। **109 :** या'नी क्या उन्हों ने शाम और इ़राक़ और यमन के सफ़रों में अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की तक्ज़ीब करने वालों की हलाकत व बरबादी के अ़ज़ाब और तबाही के निशानात नहीं देखे कि उन से इब्रत ह़ासिल करते। **110 :** या'नी वोह तबाह शुदा क़ौमें इन अहले मक्का से ज़ोरो क़ुव्वत में ज़ियादा थीं बा वुजूद इस के इतना भी तो न हो सका कि वोह अ़ज़ाब से भाग कर कहीं पनाह ले सकतीं। **111 :** या'नी उन के मआ़सी पर **112 :** या'नी रोज़े क़ियामत **113 :** उन्हें उन के आ'माल की जज़ा देगा, जो अ़ज़ाब के मुस्तह़िक़ हैं उन्हें अ़ज़ाब फ़रमाएगा और जो लाइक़े करम हैं उन पर रह़मो करम करेगा।

www.dawateislami.net